भारत में नक्सलवाद की समस्या

डॉ0 कलानन्द मंडल

प्रधानमंत्री और गृहमंत्री के इस कथन में सच्चाई है कि आतंकवाद के मुकाबले नक्सलवाद कहीं बड़ा खतरा है। जहाँ आतंकवाद के रूप में देश को कुछ गुमराह संगठनों की हिंसक गतिविधियों का सामना करना पड़ रहा है वहीं नक्सलवाद के रूप में ऐसे संगठनों से जूझना पड़ रहा है जो हिंसा के बल पर शासन व्यवस्था और संविधान को चुनौती दे रहे हैं। आतंकवादियों के संदर्भ यह समझना कठिन है कि वे क्या चाहते हैं, लेकिन इसमें संदेह नहीं कि नक्सलियों का इरादा बंदूक के बल पर समानान्तर सत्ता कायम करना है। आतंकियों से निपटना अपेक्षाकृत आसान है, क्योंकि उनके समर्थक सीमित हैं, जबकि नक्सलवाद के समर्थकों की कमी नहीं।

नक्सलवाद ने अब एक माफिया का रूप ले लिया है, लेकिन वह विचारधारा के स्तर पर भी सक्रिय हैं। यह अच्छी बात है कि प्रधानमंत्री और गृहमंत्री ने एक साथ एक ही मंच से नक्सलवाद रूपी खतरे की गंभीरता बयान की, लेकिन समस्या की थाह लेने भर से उसका समाधान होने वाला नहीं है। वैसे भी सब जानते हैं कि नक्सलवाद को न जाने कितनी बार आंतरिक सुरक्षा के लिए सबसे बड़ा खतरा बताया जा चुका है।